



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.2 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

नारायणपुर की अबूझमाडिया जनजाति में प्रजनन व्यवहार का सैद्धांतिक विश्लेषण:

एक समग्र अध्ययन।

डॉ. दिनेश कुमार कठुतिया

शासकीय जाज्वल्यदेव नवीन कन्या महाविद्यालय जाजगीर, जिला- जाजगीर-चांपा (छ.ग.) ।

सार

नारायणपुर जिले के दुर्गम एवं वनीय क्षेत्र में निवास करने वाली अबूझमाडिया जनजाति भारत के विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों में सम्मिलित है, जिनकी सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना, पारंपरिक जीवनशैली तथा भौगोलिक पृथकता उन्हें मानवशास्त्रीय एवं जनसांख्यिकीय अध्ययन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बनाती है। प्रस्तुत सैद्धांतिक शोध-पत्र का उद्देश्य अबूझमाडिया जनजाति में प्रजनन व्यवहार की जटिलताओं का बहुआयामी विश्लेषण करना है। यह अध्ययन सांस्कृतिक पारिस्थितिकी, सामाजिक संगठन एवं जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांतों के आलोक में प्रजनन प्रवृत्तियों, विवाह प्रणाली, लैंगिक भूमिकाओं तथा स्वास्थ्य व्यवहारों की व्याख्या करता है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि इस जनजाति में प्रजनन व्यवहार आधुनिक परिवार नियोजन अवधारणाओं की अपेक्षा पारंपरिक मान्यताओं, आर्थिक आवश्यकताओं तथा पर्यावरणीय परिस्थितियों से अधिक प्रभावित है। उच्च प्रजनन दर, अल्प आयु में विवाह, प्राकृतिक प्रजनन पद्धतियाँ तथा पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली पर निर्भरता इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। साथ ही, राज्य द्वारा संचालित स्वास्थ्य एवं शैक्षिक हस्तक्षेपों के कारण धीरे-धीरे परिवर्तन के संकेत भी परिलक्षित हो रहे हैं।

मुख्य शब्द: प्रजनन व्यवहार, अबूझमाडिया, जनजाति, सांस्कृतिक पारिस्थितिकी, जनसांख्यिकी, स्वास्थ्य

1. प्रस्तावना

मानव समाज में प्रजनन व्यवहार केवल एक जैविक प्रक्रिया नहीं है, अपितु यह एक जटिल सामाजिक-सांस्कृतिक तंत्र का अभिन्न एवं बहुआयामी अंग है, जो व्यक्ति, परिवार तथा व्यापक समुदाय के स्तर पर विविध निर्धारक तत्वों से प्रभावित होता है। यह व्यवहार न केवल जनसंख्या की जैविक निरंतरता



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.2 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

सुनिश्चित करता है, सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक मूल्यों, परंपराओं तथा जीवन-पद्धति के पुनरुत्पादन का भी प्रमुख माध्यम होता है। प्रजनन व्यवहार को समझने के लिए केवल जैविक दृष्टिकोण पर्याप्त नहीं है, इसके सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं पारिस्थितिक आयामों का समेकित अध्ययन अनिवार्य हो जाता है (नाग, 2019)।

जनजातीय समाजों के संदर्भ में प्रजनन व्यवहार का स्वरूप विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि यह उनके पारंपरिक जीवन-निर्वाह के साधनों, प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भरता, धार्मिक विश्वासों तथा सामुदायिक संगठन के साथ गहन रूप से अंतर्संबद्ध होता है। जनजातीय समुदायों में संतानोत्पत्ति को केवल व्यक्तिगत या पारिवारिक आवश्यकता के रूप में नहीं देखा जाता, यह सामुदायिक अस्तित्व, सामाजिक सुरक्षा एवं सांस्कृतिक निरंतरता का आधार होती है। प्रजनन व्यवहार यहाँ एक सामाजिक रूप से विनियमित एवं सांस्कृतिक रूप से संरचित प्रक्रिया के रूप में विकसित होता है (क्षत्रिय, 2015)।

नारायणपुर जिले के अबूझमाड़ क्षेत्र में निवासरत अबूझमाड़िया जनजाति इस दृष्टि से एक अत्यंत महत्वपूर्ण अध्ययन क्षेत्र प्रस्तुत करती है। यह जनजाति घने वनों, दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों तथा भौगोलिक पृथकता के कारण लंबे समय तक बाह्य समाज के प्रभावों से अपेक्षाकृत अछूती रही है। परिणामस्वरूप, इस जनजाति की सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना, पारंपरिक ज्ञान प्रणाली एवं जीवनशैली में एक विशिष्ट मौलिकता एवं स्वायत्तता दृष्टिगोचर होती है (सिंह, 2016)।

अबूझमाड़िया जनजाति का जीवन मुख्यतः वनों पर आधारित है, जहाँ शिकार, संग्रहण तथा झूम कृषि प्रमुख आर्थिक गतिविधियाँ हैं। यह अर्थव्यवस्था अनिश्चितता एवं प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता पर निर्भर करती है, जिसके कारण परिवार एवं समुदाय के स्तर पर श्रम शक्ति का विशेष महत्व होता है। इस संदर्भ में अधिक संतान उत्पन्न करना न केवल सामाजिक रूप से स्वीकार्य होता है, आर्थिक दृष्टि से भी आवश्यक माना जाता है। प्रजनन व्यवहार यहाँ एक प्रकार की पारिस्थितिक अनुकूलन प्रक्रिया के रूप में उभरता है, जो जीवन-निर्वाह की आवश्यकताओं से प्रत्यक्ष रूप से संबद्ध है (बोस, 2017)।

सामाजिक संगठन की दृष्टि से अबूझमाड़िया समाज में कबीलाई व्यवस्था, सामुदायिक जीवन तथा पारंपरिक संस्थाओं का विशेष महत्व है। विवाह, परिवार एवं लैंगिक संबंधों के नियम सामुदायिक स्तर पर निर्धारित होते हैं, जो प्रजनन व्यवहार को नियंत्रित एवं विनियमित करते हैं। उदाहरणस्वरूप, अल्पायु



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.2 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

विवाह, कबीलाई अंतर्विवाह तथा घोटुल जैसी संस्थाएँ सामाजिक जीवन के महत्वपूर्ण अंग हैं, जो युवाओं के सामाजिक एवं यौन व्यवहार को दिशा प्रदान करती हैं। प्रजनन व्यवहार एक व्यक्तिगत क्रिया न होकर सामुदायिक मानदंडों द्वारा नियंत्रित सामाजिक प्रक्रिया बन जाता है (एल्विन, 2008)।

धार्मिक एवं सांस्कृतिक विश्वास भी प्रजनन व्यवहार के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अबूझमाड़िया जनजाति में प्रकृति पूजा, पूर्वजों की आराधना तथा जीववाद की मान्यताएँ प्रचलित हैं, जिनके अंतर्गत संतानोत्पत्ति को दैवीय अनुकंपा का परिणाम माना जाता है। इस कारण, प्रजनन को नियंत्रित करने के आधुनिक उपायों की अपेक्षा प्राकृतिक प्रक्रियाओं को अधिक महत्व दिया जाता है। साथ ही, मातृत्व को स्त्री की सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रमुख आधार माना जाता है, जिससे अधिक संतान उत्पन्न करने की प्रवृत्ति को सांस्कृतिक समर्थन प्राप्त होता है (क्षत्रिय, 2015)।

स्वास्थ्य एवं पोषण की दृष्टि से भी यह जनजाति अनेक चुनौतियों का सामना करती है, जो उनके प्रजनन व्यवहार को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। आधुनिक स्वास्थ्य सेवाओं की सीमित उपलब्धता, पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों पर निर्भरता तथा पोषण की कमी के कारण मातृ एवं शिशु मृत्यु दर अपेक्षाकृत अधिक होती है। ऐसी परिस्थितियों में अधिक संतान उत्पन्न करना एक प्रकार की सामाजिक सुरक्षा रणनीति के रूप में उभरता है, जिससे परिवार की संरचना संतुलित बनी रहे (शर्मा, 2018)।

जनसांख्यिकीय परिप्रेक्ष्य में अबूझमाड़िया जनजाति को जनसांख्यिकीय संक्रमण के प्रारंभिक चरण में स्थित माना जा सकता है, जहाँ उच्च जन्मदर एवं उच्च मृत्यु दर का सह-अस्तित्व पाया जाता है। यह स्थिति पारंपरिक एवं अविकसित समाजों की प्रमुख विशेषता है, जहाँ आधुनिक शिक्षा, स्वास्थ्य एवं परिवार नियोजन सेवाओं का प्रभाव सीमित होता है (नाग, 2019)।

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर यह प्रतिपादित किया जा सकता है कि अबूझमाड़िया जनजाति में प्रजनन व्यवहार केवल जैविक प्रवृत्ति का परिणाम नहीं है, यह एक जटिल सामाजिक-सांस्कृतिक प्रक्रिया है, जो पर्यावरणीय परिस्थितियों, आर्थिक संरचना, सामाजिक संगठन, धार्मिक विश्वासों एवं स्वास्थ्य संबंधी कारकों के अंतःक्रियात्मक प्रभावों से निर्मित होती है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. अबूझमाड़िया जनजाति के प्रजनन व्यवहार की प्रकृति एवं स्वरूप का विश्लेषण करना।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.2 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

2. सामाजिक संगठन, विवाह प्रणाली एवं लैंगिक संबंधों की भूमिका का अध्ययन करना।
3. स्वास्थ्य, पोषण एवं पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के प्रभाव का मूल्यांकन करना।
4. विकास योजनाओं एवं सरकारी हस्तक्षेपों के प्रजनन व्यवहार पर प्रभाव का विश्लेषण करना।

2. सैद्धांतिक रूपरेखा

(i) सांस्कृतिक पारिस्थितिकी सिद्धांत

सांस्कृतिक पारिस्थितिकी सिद्धांत मानवशास्त्र एवं समाजशास्त्र का एक महत्वपूर्ण वैचारिक ढाँचा है, जो यह प्रतिपादित करता है कि मानव समाज का व्यवहार, उसकी सांस्कृतिक संरचना तथा जीवन-निर्वाह की पद्धतियाँ उसके प्राकृतिक परिवेश के साथ गहन अंतःक्रिया के परिणामस्वरूप विकसित होती हैं। इस सिद्धांत के अनुसार, मनुष्य केवल पर्यावरण का उपभोक्ता नहीं होता, वह अपने सांस्कृतिक तंत्र के माध्यम से पर्यावरण के साथ एक गतिशील एवं अनुकूलनात्मक संबंध स्थापित करता है। विशेषतः प्रजनन व्यवहार, जो जनसंख्या संरचना एवं सामाजिक निरंतरता का आधार है, पर्यावरणीय संसाधनों, पारिस्थितिक सीमाओं तथा आजीविका के स्वरूप से गहराई से प्रभावित होता है (बोस, 2017)।

अबूझमाडिया जनजाति के संदर्भ में सांस्कृतिक पारिस्थितिकी सिद्धांत का विश्लेषण अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है, क्योंकि यह जनजाति घने वनों, दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों तथा सीमित संसाधनों वाले पारिस्थितिक तंत्र में निवास करती है। यहाँ का प्राकृतिक परिवेश न केवल उनके आर्थिक जीवन को निर्धारित करता है, उनके सामाजिक व्यवहार, सांस्कृतिक मान्यताओं एवं प्रजनन संबंधी निर्णयों को भी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है।

अबूझमाडिया समाज की आजीविका मुख्यतः शिकार, संग्रहण तथा झूम कृषि पर आधारित है, जो अत्यधिक अनिश्चित एवं मौसमी प्रकृति की होती है। इस प्रकार की अर्थव्यवस्था में संसाधनों की उपलब्धता स्थिर नहीं रहती, जिसके कारण जीवन-निर्वाह के लिए निरंतर श्रम शक्ति की आवश्यकता होती है। इस संदर्भ में अधिक संतान उत्पन्न करना एक प्रकार की अनुकूलनात्मक रणनीति के रूप में उभरता है, जिससे परिवार के पास पर्याप्त श्रमबल उपलब्ध रहे। प्रजनन व्यवहार यहाँ केवल जैविक प्रवृत्ति न होकर आर्थिक आवश्यकता से प्रेरित एक सांस्कृतिक निर्णय बन जाता है (नाग, 2019)।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.2 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

सांस्कृतिक पारिस्थितिकी यह भी स्पष्ट करती है कि सीमित संसाधनों वाले समाजों में प्रजनन व्यवहार का स्वरूप अक्सर द्वैतात्मक (dual) होता है। एक ओर, अधिक संतान उत्पन्न करने की प्रवृत्ति होती है ताकि श्रम शक्ति में वृद्धि हो सके; वहीं दूसरी ओर, संसाधनों की सीमितता के कारण जनसंख्या वृद्धि पर अप्रत्यक्ष नियंत्रण भी देखने को मिलता है। अबूझमाडिया समाज में यह नियंत्रण विभिन्न सांस्कृतिक प्रथाओं, जैसे विवाह की आयु, स्तनपान की अवधि तथा पारंपरिक यौन व्यवहार के नियमों के माध्यम से स्थापित होता है। प्रजनन व्यवहार एक संतुलनकारी तंत्र (balancing mechanism) के रूप में कार्य करता है, जो जनसंख्या एवं संसाधनों के मध्य संतुलन बनाए रखने में सहायक होता है (शर्मा, 2018)।

प्राकृतिक परिवेश के साथ गहरे संबंध के कारण अबूझमाडिया जनजाति में संतानोत्पत्ति को प्रकृति की देन के रूप में देखा जाता है। उनके धार्मिक विश्वासों में प्रकृति पूजा एवं जीववाद की प्रमुखता है, जिसके अंतर्गत मानव जीवन एवं प्रजनन को प्राकृतिक चक्र का अभिन्न अंग माना जाता है। प्रजनन व्यवहार केवल सामाजिक या आर्थिक निर्णय नहीं, एक सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक प्रक्रिया भी बन जाता है। यह दृष्टिकोण आधुनिक समाजों में प्रचलित परिवार नियोजन की अवधारणाओं से भिन्न है, जहाँ प्रजनन को नियंत्रित एवं नियोजित करने पर अधिक बल दिया जाता है (क्षत्रिय, 2015)।

सांस्कृतिक पारिस्थितिकी के परिप्रेक्ष्य में यह भी महत्वपूर्ण है कि अबूझमाडिया समाज में स्त्रियों की भूमिका प्रजनन एवं उत्पादन दोनों में केंद्रीय होती है। महिलाएँ न केवल संतानोत्पत्ति की जिम्मेदारी निभाती हैं, वे कृषि, संग्रहण एवं घरेलू कार्यों में भी सक्रिय रूप से भाग लेती हैं। उनकी प्रजनन क्षमता को आर्थिक उत्पादन से भी जोड़ा जाता है। परिणामस्वरूप, मातृत्व को सामाजिक प्रतिष्ठा एवं आर्थिक योगदान के रूप में देखा जाता है, जिससे अधिक संतान उत्पन्न करने की प्रवृत्ति को सांस्कृतिक स्वीकृति मिलती है (सिंह, 2016)।

पारिस्थितिक अनिश्चितता—जैसे सूखा, वन संसाधनों की कमी अथवा बीमारियाँ—भी प्रजनन व्यवहार को प्रभावित करती हैं। ऐसी परिस्थितियों में उच्च शिशु एवं मातृ मृत्यु दर की संभावना बनी रहती है, जिसके कारण अधिक संतान उत्पन्न करना एक प्रकार की 'सुरक्षा रणनीति' (security strategy) के रूप में उभरता है। यह रणनीति इस धारणा पर आधारित होती है कि अधिक संतान होने से कुछ संतानों के जीवित रहने की संभावना अधिक होती है, जिससे परिवार की संरचना एवं श्रम शक्ति बनी रहती है (नाग, 2019)।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.2 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

सांस्कृतिक पारिस्थितिकी सिद्धांत यह भी इंगित करता है कि जैसे-जैसे पर्यावरणीय परिस्थितियाँ एवं संसाधनों की उपलब्धता में परिवर्तन होता है, वैसे-वैसे प्रजनन व्यवहार में भी परिवर्तन देखने को मिलता है। वर्तमान समय में, सरकारी विकास योजनाओं, स्वास्थ्य सेवाओं एवं शिक्षा के प्रसार के कारण अबूझमाड़िया समाज में भी धीरे-धीरे परिवर्तन के संकेत मिल रहे हैं। आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं की उपलब्धता से शिशु एवं मातृ मृत्यु दर में कमी आ रही है, जिससे प्रजनन व्यवहार में धीरे-धीरे नियोजन की प्रवृत्ति विकसित हो रही है। तथापि, यह परिवर्तन अभी प्रारंभिक अवस्था में है और पारंपरिक सांस्कृतिक मान्यताएँ अभी भी प्रमुख भूमिका निभा रही हैं (शर्मा, 2018)।

यह कहा जा सकता है कि अबूझमाड़िया जनजाति में प्रजनन व्यवहार को समझने के लिए सांस्कृतिक पारिस्थितिकी सिद्धांत अत्यंत उपयुक्त एवं प्रभावी दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि प्रजनन व्यवहार केवल व्यक्तिगत निर्णय का परिणाम नहीं है, यह पर्यावरणीय संसाधनों, आर्थिक आवश्यकताओं, सामाजिक संरचना एवं सांस्कृतिक मान्यताओं के जटिल अंतर्संबंधों से निर्मित एक अनुकूलनात्मक प्रक्रिया है।

अबूझमाड़िया समाज में प्रजनन व्यवहार को एक समग्र दृष्टिकोण से देखने की आवश्यकता है, जिसमें पारिस्थितिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक सभी आयामों को समाहित किया जाए। ऐसा करने से न केवल इस जनजाति की जीवन-शैली एवं सामाजिक संरचना को बेहतर ढंग से समझा जा सकेगा, उनके विकास एवं स्वास्थ्य संबंधी नीतियों को अधिक प्रभावी एवं संवेदनशील बनाया जा सकेगा।

(ii) सामाजिक संगठन सिद्धांत

सामाजिक संगठन सिद्धांत यह प्रतिपादित करता है कि किसी भी समाज की संरचना—विशेषतः परिवार, कबीला, वंश, विवाह प्रणाली तथा सामुदायिक संस्थाएँ—व्यक्ति के व्यवहार को न केवल प्रभावित करती हैं, उसे नियंत्रित एवं विनियमित भी करती हैं। इस सिद्धांत के अनुसार, मानव व्यवहार स्वायत्त या पूर्णतः व्यक्तिगत नहीं होता, वह सामाजिक मानदंडों, परंपराओं एवं संस्थागत नियमों के अधीन निर्मित एवं संचालित होता है। विशेषतः प्रजनन व्यवहार, जो समाज की जैविक एवं सांस्कृतिक निरंतरता का आधार है, सामाजिक संगठन की संरचना से गहराई से जुड़ा होता है (सिंह, 2016)।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.2 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

अबूझमाडिया जनजाति के संदर्भ में सामाजिक संगठन सिद्धांत का अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक है, क्योंकि यह समाज एक सुदृढ़ कबीलाई व्यवस्था एवं सामुदायिक जीवन प्रणाली पर आधारित है। यहाँ व्यक्ति की पहचान केवल एक स्वतंत्र इकाई के रूप में नहीं, एक कबीले, परिवार एवं समुदाय के सदस्य के रूप में निर्धारित होती है। प्रजनन संबंधी निर्णय भी व्यक्तिगत इच्छा के बजाय सामुदायिक मान्यताओं एवं सामाजिक अपेक्षाओं के अनुरूप होते हैं।

अबूझमाडिया समाज में **कबीलाई संरचना** सामाजिक संगठन का प्रमुख आधार है। प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी कबीले से संबद्ध होता है, और यह कबीला उसकी सामाजिक पहचान, विवाह संबंधों एवं पारिवारिक संरचना को निर्धारित करता है। कबीलाई नियमों के अंतर्गत विवाह के लिए विशिष्ट प्रतिबंध एवं स्वीकृतियाँ निर्धारित होती हैं, जैसे कि गोत्र या कबीले के भीतर विवाह निषिद्ध हो सकता है या कुछ विशेष कबीलाई समूहों के मध्य ही वैवाहिक संबंध स्थापित किए जा सकते हैं। इस प्रकार की संरचना प्रजनन व्यवहार को नियंत्रित करती है तथा सामाजिक संतुलन बनाए रखती है (एल्विन, 2008)।

विवाह प्रणाली सामाजिक संगठन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटक है, जो प्रजनन व्यवहार को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। अबूझमाडिया समाज में विवाह केवल दो व्यक्तियों का व्यक्तिगत संबंध नहीं, दो परिवारों एवं कबीलाई समूहों के मध्य सामाजिक अनुबंध होता है। विवाह की आयु, साथी चयन, वैवाहिक नियम तथा अनुष्ठान ये तत्व सामाजिक रूप से निर्धारित होते हैं। अल्पायु विवाह की प्रथा प्रजनन काल को विस्तारित करती है, जिससे उच्च प्रजनन दर को सामाजिक स्वीकृति मिलती है। साथ ही, विवाह के पश्चात संतानोत्पत्ति को अनिवार्य सामाजिक कर्तव्य के रूप में देखा जाता है (नाग, 2019)।

कुछ जनजातीय समुदायों में पाई जाने वाली **समूह आधारित सामाजिक व्यवस्थाएँ** (जैसे घोटुल प्रणाली) युवाओं के सामाजिक एवं यौन व्यवहार को दिशा प्रदान करती हैं। यद्यपि यह प्रणाली विभिन्न जनजातियों में भिन्न रूपों में पाई जाती है, परंतु इसका मूल उद्देश्य सामाजिक अनुशासन एवं सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण होता है। इस प्रकार की संस्थाएँ युवाओं को विवाह, लैंगिक संबंध एवं पारिवारिक जीवन के लिए तैयार करती हैं, जिससे प्रजनन व्यवहार एक नियोजित एवं सामाजिक रूप से नियंत्रित प्रक्रिया बन जाता है (एल्विन, 2008)।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.2 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

परिवार भी सामाजिक संगठन का एक केंद्रीय तत्व है, जो प्रजनन व्यवहार को प्रभावित करता है। अबूझमाडिया समाज में परिवार प्रायः विस्तारित एवं सामुदायिक स्वरूप का होता है, जहाँ निर्णय सामूहिक रूप से लिए जाते हैं। संतानोत्पत्ति केवल दंपत्ति का व्यक्तिगत निर्णय नहीं होता, यह पूरे परिवार एवं समुदाय की अपेक्षाओं से जुड़ा होता है। अधिक संतान उत्पन्न करना परिवार की सामाजिक प्रतिष्ठा एवं आर्थिक शक्ति का प्रतीक माना जाता है, जिससे प्रजनन व्यवहार को सामाजिक प्रोत्साहन मिलता है (बोस, 2017)।

लैंगिक भूमिकाएँ भी सामाजिक संगठन के अंतर्गत प्रजनन व्यवहार को प्रभावित करती हैं। अबूझमाडिया समाज में स्त्री एवं पुरुष की भूमिकाएँ स्पष्ट रूप से परिभाषित होती हैं। स्त्रियों को मातृत्व, बाल-पालन एवं घरेलू कार्यों की जिम्मेदारी सौंपी जाती है, जबकि पुरुषों की भूमिका शिकार, कृषि एवं बाह्य कार्यों में प्रमुख होती है। इस प्रकार की लैंगिक संरचना प्रजनन व्यवहार को एक सामाजिक दायित्व के रूप में स्थापित करती है, जिसमें स्त्री की प्रजनन क्षमता को विशेष महत्व दिया जाता है (क्षत्रिय, 2015)।

सामुदायिक नियंत्रण भी सामाजिक संगठन का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो प्रजनन व्यवहार को विनियमित करता है। अबूझमाडिया समाज में सामाजिक मानदंडों का उल्लंघन करने पर दंडात्मक या बहिष्करणात्मक कार्यवाहियाँ हो सकती हैं। उदाहरणस्वरूप, विवाह संबंधी नियमों का उल्लंघन या संतानोत्पत्ति से संबंधित सामाजिक अपेक्षाओं की अवहेलना को अस्वीकार्य माना जा सकता है। सामाजिक नियंत्रण प्रजनन व्यवहार को सामाजिक स्वीकृति के दायरे में बनाए रखता है (शर्मा, 2018)।

सामाजिक संगठन सिद्धांत यह भी इंगित करता है कि समाज में परिवर्तन के साथ-साथ प्रजनन व्यवहार में भी परिवर्तन आता है। वर्तमान समय में शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं एवं बाह्य संपर्क के बढ़ने से अबूझमाडिया समाज की पारंपरिक संरचनाओं में धीरे-धीरे परिवर्तन हो रहा है। विवाह की आयु में वृद्धि, परिवार नियोजन के प्रति जागरूकता एवं लैंगिक भूमिकाओं में परिवर्तन जैसे कारक प्रजनन व्यवहार को प्रभावित कर रहे हैं। तथापि, यह परिवर्तन अभी सीमित स्तर पर है, और पारंपरिक सामाजिक संगठन अभी भी प्रमुख भूमिका निभा रहा है (नाग, 2019)।

यह कहा जा सकता है कि अबूझमाडिया जनजाति में प्रजनन व्यवहार को समझने के लिए सामाजिक संगठन सिद्धांत एक अत्यंत प्रभावी दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह सिद्धांत स्पष्ट करता है कि प्रजनन



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.2 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

व्यवहार केवल व्यक्तिगत जैविक प्रवृत्ति का परिणाम नहीं है, यह परिवार, कबीला, विवाह प्रणाली एवं सामुदायिक संस्थाओं द्वारा नियंत्रित एवं विनियमित एक सामाजिक प्रक्रिया है।

प्रजनन व्यवहार का अध्ययन करते समय सामाजिक संगठन के विभिन्न आयामों—जैसे कबीलाई संरचना, विवाह नियम, पारिवारिक व्यवस्था एवं सामुदायिक नियंत्रण—को समझना आवश्यक है। इससे न केवल जनजातीय समाजों की सामाजिक संरचना की गहन समझ विकसित होती है, उनके विकास एवं स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रमों को अधिक प्रभावी ढंग से लागू करने में भी सहायता मिलती है।

(iii) जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत

जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत जनसंख्या अध्ययन का एक महत्वपूर्ण वैचारिक प्रतिमान है, जो समाजों में जन्मदर एवं मृत्यु दर के परिवर्तन को आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास के विभिन्न चरणों से जोड़कर व्याख्यायित करता है। इस सिद्धांत के अनुसार, किसी भी समाज की जनसंख्या संरचना स्थिर नहीं होती, समय के साथ उसमें परिवर्तन होता है, जो मुख्यतः स्वास्थ्य सुविधाओं, शिक्षा, नगरीकरण, औद्योगिकीकरण तथा जीवन-स्तर में सुधार के साथ जुड़ा होता है (शर्मा, 2018)।

जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत सामान्यतः चार प्रमुख चरणों का उल्लेख करता है। प्रथम चरण में जन्मदर एवं मृत्यु दर दोनों ही उच्च होती हैं, जिसके परिणामस्वरूप जनसंख्या वृद्धि धीमी अथवा स्थिर रहती है। द्वितीय चरण में स्वास्थ्य सेवाओं एवं पोषण में सुधार के कारण मृत्यु दर में कमी आती है, जबकि जन्मदर उच्च बनी रहती है, जिससे जनसंख्या में तीव्र वृद्धि होती है। तृतीय चरण में सामाजिक परिवर्तन, शिक्षा एवं परिवार नियोजन के प्रभाव से जन्मदर में कमी आने लगती है। चतुर्थ चरण में जन्मदर एवं मृत्यु दर दोनों निम्न स्तर पर स्थिर हो जाती हैं, जिससे जनसंख्या वृद्धि अत्यंत धीमी हो जाती है (नाग, 2019)।

अबूझमाडिया जनजाति के संदर्भ में यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि यह समाज अभी भी जनसांख्यिकीय संक्रमण के प्रारंभिक चरण में स्थित है, जहाँ उच्च जन्मदर एवं अपेक्षाकृत उच्च मृत्यु दर का सह-अस्तित्व पाया जाता है। इस स्थिति के पीछे अनेक संरचनात्मक एवं सांस्कृतिक कारण निहित हैं, जिनका विश्लेषण आवश्यक है।

प्रथम, उच्च जन्मदर अबूझमाडिया समाज की एक प्रमुख विशेषता है। इस जनजाति में अधिक संतान उत्पन्न करना सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से वांछनीय माना जाता है। संतान को परिवार की



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.2 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

श्रम शक्ति, वृद्धावस्था में सुरक्षा तथा सामाजिक प्रतिष्ठा के स्रोत के रूप में देखा जाता है। , अल्पायु विवाह, गर्भनिरोधक साधनों की सीमित उपलब्धता तथा पारंपरिक मान्यताएँ उच्च प्रजनन दर को बनाए रखने में सहायक होती हैं (बोस, 2017)।

द्वितीय, मृत्यु दर भी अपेक्षाकृत उच्च है, विशेषतः शिशु एवं मातृ मृत्यु दर के संदर्भ में। इसका प्रमुख कारण आधुनिक स्वास्थ्य सेवाओं की सीमित उपलब्धता, पोषण की कमी, स्वच्छता के अभाव तथा पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों पर अत्यधिक निर्भरता है। दुर्गम भौगोलिक स्थिति के कारण स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुँच कठिन होती है, जिससे अनेक रोगों का समय पर उपचार संभव नहीं हो पाता (क्षत्रिय, 2015)।

उच्च जन्मदर एवं उच्च मृत्यु दर का यह संयोजन जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित रखते हुए भी उसे स्थिर बनाए रखता है। यह स्थिति जनसांख्यिकीय संक्रमण के प्रथम चरण की प्रमुख विशेषता है, जहाँ जनसंख्या में तीव्र वृद्धि नहीं होती, किंतु जनसंख्या का आकार स्थिर बना रहता है (शर्मा, 2018)।

जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत के संदर्भ में यह भी महत्वपूर्ण है कि अबूझमाड़िया समाज में शिक्षा एवं जागरूकता का स्तर अपेक्षाकृत निम्न है, जिससे परिवार नियोजन, मातृ स्वास्थ्य एवं बाल देखभाल से संबंधित आधुनिक अवधारणाओं का प्रसार सीमित रहता है। परिणामस्वरूप, प्रजनन व्यवहार पारंपरिक मान्यताओं एवं सामाजिक अपेक्षाओं द्वारा संचालित होता है।

आर्थिक संरचना भी इस स्थिति को प्रभावित करती है। जीविका आधारित अर्थव्यवस्था में अधिक संतान उत्पन्न करना एक प्रकार की आर्थिक रणनीति के रूप में कार्य करता है, जिससे परिवार के पास पर्याप्त श्रम शक्ति उपलब्ध रहती है। यह प्रवृत्ति जनसंख्या वृद्धि को बनाए रखने में सहायक होती है, भले ही मृत्यु दर उच्च क्यों न हो (सिंह, 2016)।

, वर्तमान समय में बाह्य संपर्क, सरकारी योजनाओं एवं विकास कार्यक्रमों के प्रभाव से इस जनजाति में धीरे-धीरे परिवर्तन के संकेत दिखाई दे रहे हैं। स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार, टीकाकरण कार्यक्रम, पोषण योजनाएँ एवं शिक्षा का प्रसार मृत्यु दर को कम करने में सहायक हो रहे हैं। यदि यह प्रवृत्ति निरंतर बनी रहती है, तो भविष्य में यह समाज जनसांख्यिकीय संक्रमण के द्वितीय चरण की ओर अग्रसर हो सकता है, जहाँ मृत्यु दर में कमी आने लगेगी, जबकि जन्मदर अभी भी उच्च बनी रहेगी (नाग, 2019)।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.2 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

परिवार नियोजन कार्यक्रमों, महिला शिक्षा एवं जागरूकता अभियानों के माध्यम से जन्मदर में भी धीरे-धीरे कमी लाई जा सकती है, जिससे यह समाज तृतीय चरण की ओर अग्रसर हो सकेगा। तथापि, यह परिवर्तन एक दीर्घकालिक प्रक्रिया है, जिसमें सांस्कृतिक मान्यताओं एवं सामाजिक संरचनाओं का महत्वपूर्ण प्रभाव बना रहेगा।

यह कहा जा सकता है कि अबूझमाडिया जनजाति का जनसांख्यिकीय स्वरूप पारंपरिक समाजों की विशिष्ट विशेषताओं को प्रदर्शित करता है, जहाँ उच्च जन्मदर एवं उच्च मृत्यु दर के बीच संतुलन स्थापित होता है। जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत इस स्थिति को समझने के लिए एक प्रभावी सैद्धांतिक आधार प्रदान करता है, जो यह स्पष्ट करता है कि प्रजनन व्यवहार एवं जनसंख्या संरचना समाज के विकास स्तर, स्वास्थ्य सुविधाओं, शिक्षा एवं सांस्कृतिक मान्यताओं से गहराई से प्रभावित होती है।

अबूझमाडिया जनजाति के प्रजनन व्यवहार का समुचित विश्लेषण करने के लिए जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत को अन्य सामाजिक एवं सांस्कृतिक सिद्धांतों के साथ समन्वित रूप में अपनाना आवश्यक है। इससे न केवल इस जनजाति की जनसंख्या गतिशीलता को बेहतर ढंग से समझा जा सकेगा, उनके स्वास्थ्य एवं विकास संबंधी कार्यक्रमों को अधिक प्रभावी एवं यथार्थपरक बनाया जा सकेगा।

3. विवाह एवं लैंगिक संबंध

अबूझमाडिया समाज में विवाह संस्था प्रजनन व्यवहार की आधारशिला है। यहाँ विवाह केवल दो व्यक्तियों का संबंध नहीं, दो कुलों एवं कबीलाई समूहों के मध्य सामाजिक अनुबंध है।

- अल्प आयु में विवाह इस समाज की एक प्रमुख विशेषता है, जिससे प्रजनन काल की अवधि विस्तृत हो जाती है।
- एंडोगैमी एवं एक्सोगैमी का मिश्रित स्वरूप सामाजिक संतुलन बनाए रखता है।
- घोटुल प्रणाली युवा वर्ग को सामाजिक एवं यौन व्यवहार के लिए प्रशिक्षित करती है, जिससे विवाह पूर्व संबंधों का सांस्कृतिक नियमन होता है।
- लैंगिक संबंधों में स्त्री एवं पुरुष की भूमिकाएँ स्पष्ट रूप से परिभाषित हैं, किंतु स्त्रियों को सामाजिक जीवन में अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्रता भी प्राप्त होती है।

4. प्रजनन व्यवहार की प्रकृति



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.2 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

अबूझमाडिया जनजाति के प्रजनन व्यवहार को समझने के लिए उसकी अंतर्निहित विशेषताओं का गहन विश्लेषण आवश्यक है, क्योंकि यही वे आधारभूत तत्त्व हैं जो इस समाज की जनसंख्या संरचना, सामाजिक संगठन तथा सांस्कृतिक निरंतरता को निर्धारित करते हैं। यह विशेषताएँ केवल जैविक प्रवृत्तियों का परिणाम नहीं हैं, आर्थिक आवश्यकताओं, पारंपरिक मान्यताओं, सामाजिक प्रतिष्ठा एवं सामुदायिक जीवन के समन्वित प्रभावों से निर्मित होती हैं (नाग, 2019)।

(i) उच्च प्रजनन दर

अबूझमाडिया समाज में उच्च प्रजनन दर एक प्रमुख विशेषता के रूप में दृष्टिगोचर होती है, जो उनके आर्थिक एवं सामाजिक ढाँचे से गहराई से संबद्ध है। इस समाज में अधिक संतान उत्पन्न करना न केवल वांछनीय माना जाता है, इसे एक प्रकार की सामाजिक एवं आर्थिक आवश्यकता के रूप में भी देखा जाता है।

वन-आधारित अर्थव्यवस्था, जिसमें शिकार, संग्रहण एवं झूम कृषि प्रमुख हैं, श्रम-प्रधान होती है। ऐसे में परिवार के पास अधिक श्रम शक्ति होना अत्यंत आवश्यक होता है, और बच्चे इस श्रम शक्ति का प्रमुख स्रोत होते हैं। वे बाल्यावस्था से ही पारिवारिक कार्यों में सहयोग देने लगते हैं, जिससे परिवार की उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती है। अधिक संतान उत्पन्न करना आर्थिक दृष्टि से लाभकारी माना जाता है (बोस, 2017)।

उच्च शिशु एवं मातृ मृत्यु दर की संभावना भी अधिक संतान उत्पन्न करने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करती है। यह एक प्रकार की 'प्रतिपूरक रणनीति' है, जिसके माध्यम से परिवार यह सुनिश्चित करता है कि कुछ संतानें जीवित रहकर वयस्क अवस्था तक पहुँच सकें। उच्च प्रजनन दर एक सामाजिक-सांस्कृतिक अनुकूलन का परिणाम है, जो अनिश्चित जीवन परिस्थितियों के प्रति प्रतिक्रिया के रूप में विकसित हुआ है (शर्मा, 2018)।

(ii) प्राकृतिक प्रजनन

अबूझमाडिया समाज में प्रजनन व्यवहार मुख्यतः प्राकृतिक स्वरूप का होता है, जिसमें आधुनिक गर्भनिरोधक साधनों का उपयोग अत्यंत सीमित या नगण्य होता है। इसका प्रमुख कारण स्वास्थ्य सेवाओं की सीमित उपलब्धता, शिक्षा एवं जागरूकता का अभाव तथा पारंपरिक मान्यताओं का प्रभाव है।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.2 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

इस समाज में संतानोत्पत्ति को प्राकृतिक एवं दैवीय प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है, जिसमें मानवीय हस्तक्षेप को उचित नहीं माना जाता। इस कारण, गर्भनिरोधक उपायों को अपनाने की प्रवृत्ति विकसित नहीं हो पाती। , प्रजनन से संबंधित निर्णय व्यक्तिगत न होकर सामुदायिक एवं पारंपरिक मान्यताओं द्वारा संचालित होते हैं, जिससे प्राकृतिक प्रजनन प्रणाली को सामाजिक स्वीकृति प्राप्त होती है (क्षत्रिय, 2015)।

प्राकृतिक प्रजनन की यह प्रवृत्ति उच्च जन्मदर को बनाए रखने में सहायक होती है, क्योंकि इसमें जन्म के बीच अंतराल को नियंत्रित करने के लिए कोई योजनाबद्ध प्रयास नहीं किया जाता। प्रजनन व्यवहार एक स्वाभाविक एवं निरंतर प्रक्रिया के रूप में संचालित होता है (नाग, 2019)।

(iii) मातृत्व का सामाजिक महत्व

अबूझमाड़िया समाज में मातृत्व को स्त्री की सामाजिक प्रतिष्ठा, सम्मान एवं पहचान का प्रमुख आधार माना जाता है। एक स्त्री की सामाजिक स्थिति उसके मातृत्व एवं संतानोत्पत्ति की क्षमता से जुड़ी होती है, जिससे अधिक संतान उत्पन्न करने की प्रवृत्ति को सांस्कृतिक समर्थन प्राप्त होता है।

मातृत्व को केवल जैविक भूमिका के रूप में नहीं देखा जाता, यह एक सामाजिक उत्तरदायित्व एवं सांस्कृतिक मूल्य के रूप में स्थापित होता है। संतानहीनता को नकारात्मक दृष्टि से देखा जा सकता है, जबकि अधिक संतान वाली स्त्री को समाज में सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। मातृत्व सामाजिक संरचना का एक महत्वपूर्ण अंग बन जाता है, जो प्रजनन व्यवहार को प्रभावित करता है (सिंह, 2016)।

स्त्रियाँ न केवल मातृत्व की भूमिका निभाती हैं, वे आर्थिक उत्पादन एवं सामुदायिक जीवन में भी सक्रिय योगदान देती हैं। उनकी प्रजनन क्षमता को सामाजिक एवं आर्थिक दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण माना जाता है, जिससे प्रजनन व्यवहार को और अधिक प्रोत्साहन मिलता है (बोस, 2017)।

(iv) जन्म एवं पालन-पोषण

अबूझमाड़िया समाज में प्रसव की प्रक्रिया मुख्यतः पारंपरिक पद्धतियों पर आधारित होती है। अधिकांश प्रसव घर पर ही संपन्न होते हैं, जिनमें पारंपरिक दाइयों (traditional birth attendants) की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। ये दाइयाँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचित ज्ञान एवं अनुभव के आधार पर प्रसव कराती हैं, जो इस समाज की सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा है (क्षत्रिय, 2015)।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.2 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं की सीमित उपलब्धता के कारण प्रसव के दौरान जोखिम की संभावना बनी रहती है, जिससे मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। तथापि, पारंपरिक ज्ञान प्रणाली एवं औषधीय पौधों का उपयोग इस प्रक्रिया को सुरक्षित बनाने का प्रयास करता है।

नवजात शिशुओं के पालन-पोषण में सामुदायिक सहयोग एक महत्वपूर्ण विशेषता है। परिवार के अतिरिक्त अन्य सदस्य एवं समुदाय के लोग भी बाल-पालन में सहयोग करते हैं, जिससे सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती है। यह सामुदायिक दृष्टिकोण न केवल बच्चों के सामाजिक विकास में सहायक होता है, परिवार पर पड़ने वाले भार को भी कम करता है (सिंह, 2016)।

स्तनपान, पारंपरिक आहार एवं प्राकृतिक देखभाल पद्धतियाँ बाल-पालन की प्रमुख विशेषताएँ हैं। यद्यपि इन पद्धतियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अभाव हो सकता है, तथापि वे सांस्कृतिक रूप से स्वीकृत एवं व्यावहारिक होती हैं।

निष्कर्षात्मक टिप्पणी

उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि अबूझमाड़िया समाज में प्रजनन व्यवहार की विशेषताएँ—जैसे उच्च प्रजनन दर, प्राकृतिक प्रजनन, मातृत्व का सामाजिक महत्व तथा पारंपरिक जन्म एवं पालन-पोषण पद्धतियाँ—एक समग्र सामाजिक-सांस्कृतिक तंत्र के अंतर्गत विकसित होती हैं। ये विशेषताएँ केवल जैविक आवश्यकताओं का परिणाम नहीं हैं, आर्थिक संरचना, पारंपरिक विश्वासों एवं सामुदायिक जीवन के साथ गहराई से अंतर्संबद्ध हैं।

5. सामाजिक-सांस्कृतिक निर्धारक

प्रजनन व्यवहार को प्रभावित करने वाले प्रमुख सामाजिक-सांस्कृतिक कारक: विस्तृत विवेचन

अबूझमाड़िया जनजाति के प्रजनन व्यवहार को समझने के लिए उन सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक कारकों का विश्लेषण अत्यंत आवश्यक है, जो इस व्यवहार को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। यह कारक केवल बाह्य परिस्थितियों के रूप में कार्य नहीं करते, जनजातीय जीवन के मूलभूत ढाँचे का हिस्सा होते हैं, जो व्यक्ति के निर्णयों, मान्यताओं एवं व्यवहारों को संरचित एवं निर्देशित करते हैं। इस संदर्भ में धार्मिक विश्वास, आर्थिक संरचना तथा सामुदायिकता तीन ऐसे प्रमुख कारक हैं, जो प्रजनन व्यवहार को गहराई से प्रभावित करते हैं (नाग, 2019)।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.2 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

(i) धार्मिक विश्वास

अबूझमाडिया समाज में धार्मिक विश्वासों का स्वरूप प्रकृति-आधारित एवं जीववादी है, जिसमें प्रकृति, वन, जल, पर्वत तथा पूर्वजों की आराधना प्रमुख स्थान रखती है। इस समाज में जीवन के प्रत्येक पहलू—चाहे वह जन्म हो, विवाह हो या मृत्यु—धार्मिक आस्थाओं एवं अनुष्ठानों से गहराई से जुड़ा होता है।

प्रजनन व्यवहार के संदर्भ में यह देखा जाता है कि संतानोत्पत्ति को एक दैवीय आशीर्वाद के रूप में स्वीकार किया जाता है। यह धारणा इस विश्वास पर आधारित होती है कि संतान का जन्म केवल मानवीय प्रयास का परिणाम नहीं, प्रकृति एवं पूर्वजों की कृपा से संभव होता है। प्रजनन को नियंत्रित करने के आधुनिक उपायों—जैसे गर्भनिरोधक साधनों—को अपनाने की प्रवृत्ति सीमित रहती है, क्योंकि इसे प्राकृतिक या दैवीय व्यवस्था में हस्तक्षेप के रूप में देखा जा सकता है (क्षत्रिय, 2015)।

धार्मिक अनुष्ठान एवं लोक-विश्वास संतान प्राप्ति की कामना एवं सुरक्षा से जुड़े होते हैं। उदाहरणस्वरूप, विशेष पूजा-पद्धतियाँ, बलि प्रथाएँ या पूर्वजों की आराधना संतानोत्पत्ति को सुनिश्चित करने एवं नवजात शिशु की रक्षा के उद्देश्य से की जाती हैं। धार्मिक विश्वास प्रजनन व्यवहार को सांस्कृतिक वैधता प्रदान करते हैं और उसे सामाजिक रूप से प्रोत्साहित करते हैं (सिंह, 2016)।

(ii) आर्थिक संरचना

अबूझमाडिया जनजाति की आर्थिक संरचना मुख्यतः जीविका आधारित है, जो शिकार, संग्रहण एवं झूम कृषि पर निर्भर करती है। इस प्रकार की अर्थव्यवस्था में उत्पादन का स्तर सीमित होता है तथा यह प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता पर निर्भर करता है।

ऐसी परिस्थितियों में श्रम शक्ति का विशेष महत्व होता है, क्योंकि उत्पादन एवं जीवन-निर्वाह की अधिकांश गतिविधियाँ मानव श्रम पर आधारित होती हैं। इस संदर्भ में बच्चे केवल परिवार के सदस्य नहीं होते, वे आर्थिक संसाधन के रूप में भी देखे जाते हैं। वे प्रारंभिक अवस्था से ही कृषि कार्यों, वन उत्पादों के संग्रहण एवं घरेलू गतिविधियों में योगदान देने लगते हैं, जिससे परिवार की उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती है (बोस, 2017)।

फलतः अधिक संतान उत्पन्न करना एक प्रकार की आर्थिक रणनीति बन जाता है, जो परिवार की स्थिरता एवं सुरक्षा सुनिश्चित करता है।, वृद्धावस्था में माता-पिता के लिए संतान ही प्रमुख सहारा होती है, जिससे



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.2 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

अधिक बच्चों की आवश्यकता को और अधिक बल मिलता है। आर्थिक संरचना उच्च प्रजनन दर को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है (नाग, 2019)।

(iii) सामुदायिकता

अबूझमाडिया समाज की एक प्रमुख विशेषता उसकी सामुदायिक जीवन-प्रणाली है, जिसमें व्यक्तिगत हितों की अपेक्षा सामूहिक हितों को प्राथमिकता दी जाती है। इस समाज में व्यक्ति की पहचान एक स्वतंत्र इकाई के रूप में नहीं, एक समुदाय के सदस्य के रूप में होती है।

प्रजनन व्यवहार के संदर्भ में यह सामुदायिकता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। संतानोत्पत्ति से संबंधित निर्णय केवल दंपति द्वारा नहीं लिए जाते, वे परिवार एवं समुदाय की अपेक्षाओं एवं मानदंडों से प्रभावित होते हैं। अधिक संतान उत्पन्न करना सामुदायिक शक्ति एवं सामाजिक सुरक्षा के रूप में देखा जाता है, जिससे यह व्यवहार सामाजिक रूप से प्रोत्साहित होता है (सिंह, 2016)।

, बाल-पालन एवं देखभाल की प्रक्रिया भी सामुदायिक होती है, जिसमें केवल माता-पिता ही नहीं, परिवार के अन्य सदस्य एवं समुदाय के लोग भी भाग लेते हैं। बच्चों का पालन-पोषण एक सामूहिक उत्तरदायित्व बन जाता है, जिससे अधिक संतान होने पर भी परिवार पर अत्यधिक भार नहीं पड़ता। यह स्थिति उच्च प्रजनन दर को बनाए रखने में सहायक होती है (शर्मा, 2018)।

सामुदायिक नियंत्रण भी इस संदर्भ में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सामाजिक मानदंडों का उल्लंघन करने पर व्यक्ति को सामाजिक आलोचना या बहिष्कार का सामना करना पड़ सकता है, जिससे वह सामुदायिक अपेक्षाओं के अनुरूप व्यवहार करने के लिए प्रेरित होता है। प्रजनन व्यवहार व्यक्तिगत स्वतंत्रता का विषय न होकर सामुदायिक नियंत्रण के अंतर्गत संचालित होता है।

उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि अबूझमाडिया जनजाति में प्रजनन व्यवहार धार्मिक विश्वासों, आर्थिक संरचना एवं सामुदायिक जीवन-प्रणाली के जटिल अंतर्संबंधों से प्रभावित होता है। धार्मिक आस्थाएँ इसे दैवीय वैधता प्रदान करती हैं, आर्थिक आवश्यकताएँ इसे व्यावहारिक बनाती हैं, तथा सामुदायिकता इसे सामाजिक रूप से नियंत्रित एवं स्वीकृत करती है।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.2 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

यह कहा जा सकता है कि प्रजनन व्यवहार को समझने के लिए इन कारकों का समग्र एवं गहन अध्ययन अनिवार्य है, क्योंकि यही वे आधारभूत तत्व हैं जो इस जनजाति के सामाजिक जीवन एवं जनसंख्या संरचना को निर्धारित करते हैं।

6. स्वास्थ्य एवं प्रजनन

स्वास्थ्य एवं प्रजनन व्यवहार: एक विश्लेषणात्मक विवेचन

अबूझमाडिया जनजाति के संदर्भ में स्वास्थ्य सेवाओं की सीमित उपलब्धता प्रजनन व्यवहार को गहराई से प्रभावित करने वाला एक अत्यंत महत्वपूर्ण निर्धारक तत्व है। यह प्रभाव केवल जैविक स्तर तक सीमित नहीं रहता, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं जनसांख्यिकीय संरचना को भी प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। स्वास्थ्य अवसंरचना की कमी, दुर्गम भौगोलिक परिस्थितियाँ, सीमित चिकित्सा सुविधाएँ तथा पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों पर निर्भरता मिलकर एक ऐसी स्थिति निर्मित करती हैं, जिसमें प्रजनन व्यवहार विशिष्ट स्वरूप ग्रहण करता है (क्षत्रिय, 2015)।

(i) मातृ एवं शिशु मृत्यु दर का उच्च स्तर

अबूझमाडिया समाज में मातृ एवं शिशु मृत्यु दर अपेक्षाकृत अधिक पाई जाती है, जो स्वास्थ्य सेवाओं की अनुपलब्धता एवं अपर्याप्तता का प्रत्यक्ष परिणाम है। प्रसव अधिकतर घर पर पारंपरिक दाइयों द्वारा संपन्न होता है, जहाँ आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं, स्वच्छता एवं आपातकालीन देखभाल का अभाव होता है। इसके परिणामस्वरूप प्रसव के दौरान जटिलताओं की संभावना बढ़ जाती है, जिससे मातृ मृत्यु दर में वृद्धि होती है।

इसी प्रकार, नवजात शिशुओं के लिए आवश्यक टीकाकरण, पोषण एवं चिकित्सकीय देखभाल की कमी के कारण शिशु मृत्यु दर भी अधिक रहती है। यह स्थिति परिवारों को अधिक संतान उत्पन्न करने के लिए प्रेरित करती है, ताकि कुछ संतानों के जीवित रहने की संभावना सुनिश्चित हो सके। उच्च मृत्यु दर अप्रत्यक्ष रूप से उच्च प्रजनन दर को बनाए रखने में सहायक होती है (नाग, 2019)।

(ii) पोषण की कमी

पोषण की कमी भी प्रजनन व्यवहार को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। अबूझमाडिया समाज की जीविका मुख्यतः वन संसाधनों एवं पारंपरिक कृषि पर आधारित होने के कारण भोजन की



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.2 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

उपलब्धता एवं गुणवत्ता में अस्थिरता बनी रहती है। संतुलित आहार की कमी, विशेषकर गर्भवती एवं स्तनपान कराने वाली महिलाओं के लिए, स्वास्थ्य संबंधी जोखिमों को बढ़ाती है।

पोषण की कमी का प्रभाव केवल माताओं तक सीमित नहीं रहता, यह नवजात शिशुओं के स्वास्थ्य एवं विकास को भी प्रभावित करता है। कुपोषण के कारण शिशुओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता कमजोर हो जाती है, जिससे मृत्यु दर में वृद्धि होती है। पोषण की कमी भी एक अप्रत्यक्ष कारक के रूप में उच्च प्रजनन दर को बनाए रखने में योगदान देती है, क्योंकि परिवार अधिक संतानों की अपेक्षा रखते हैं (शर्मा, 2018)।

(iii) पारंपरिक औषधीय पद्धतियों पर निर्भरता

अबूझमाडिया समाज में पारंपरिक औषधीय पद्धतियों का व्यापक प्रचलन है, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचित ज्ञान एवं अनुभव पर आधारित होती हैं। जड़ी-बूटियों, वनस्पतियों एवं स्थानीय उपचार विधियों का उपयोग सामान्य रोगों एवं प्रसव संबंधी समस्याओं के समाधान के लिए किया जाता है।

यद्यपि ये पद्धतियाँ सांस्कृतिक रूप से स्वीकृत एवं सुलभ होती हैं, तथापि इनमें वैज्ञानिक चिकित्सा के अभाव के कारण जटिल रोगों एवं आपात स्थितियों का प्रभावी उपचार संभव नहीं हो पाता। इसके परिणामस्वरूप मातृ एवं शिशु मृत्यु दर में वृद्धि होती है, जो प्रजनन व्यवहार को प्रभावित करती है।

पारंपरिक विश्वासों के कारण आधुनिक चिकित्सा सेवाओं के प्रति संकोच या अविश्वास भी देखा जाता है, जिससे स्वास्थ्य सेवाओं का उपयोग सीमित रह जाता है। यह स्थिति प्रजनन व्यवहार को पारंपरिक ढाँचे में बनाए रखने में सहायक होती है (क्षत्रिय, 2015)।

समेकित विश्लेषण

उपर्युक्त तीनों कारक—मातृ एवं शिशु मृत्यु दर, पोषण की कमी एवं पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों पर निर्भरता—आपस में गहराई से जुड़े हुए हैं और मिलकर एक ऐसा चक्र (cycle) निर्मित करते हैं, जो उच्च प्रजनन दर को बनाए रखने में सहायक होता है। उच्च मृत्यु दर के कारण अधिक संतान उत्पन्न करने की प्रवृत्ति विकसित होती है, जबकि सीमित स्वास्थ्य सुविधाएँ एवं पोषण की कमी इस स्थिति को और अधिक जटिल बना देती हैं।

यह स्पष्ट होता है कि स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियाँ केवल एक समस्या के रूप में नहीं, प्रजनन व्यवहार के निर्धारण में एक सक्रिय कारक के रूप में कार्य करती हैं। यह स्थिति जनसांख्यिकीय संक्रमण के प्रारंभिक



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.2 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

चरण की विशेषताओं को भी परिलक्षित करती है, जहाँ उच्च जन्मदर एवं उच्च मृत्यु दर का सह-अस्तित्व पाया जाता है (शर्मा, 2018)।

निष्कर्षात्मक टिप्पणी

यह कहा जा सकता है कि अबूझमाड़िया जनजाति में स्वास्थ्य सेवाओं की सीमित उपलब्धता प्रजनन व्यवहार को गहराई से प्रभावित करती है। मातृ एवं शिशु मृत्यु दर का उच्च स्तर, पोषण की कमी तथा पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों पर निर्भरता मिलकर एक ऐसी सामाजिक-जनसांख्यिकीय संरचना का निर्माण करते हैं, जिसमें उच्च प्रजनन दर एक अनुकूलनात्मक एवं आवश्यक रणनीति के रूप में उभरती है। यदि इस जनजाति के प्रजनन व्यवहार में संतुलन लाना है, तो स्वास्थ्य सेवाओं के सुदृढीकरण, पोषण सुधार एवं आधुनिक चिकित्सा के प्रति जागरूकता बढ़ाने पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है।

7. परिवर्तन एवं आधुनिक प्रभाव

परिवर्तन एवं आधुनिक प्रभाव: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

अबूझमाड़िया जनजाति, जो लंबे समय तक भौगोलिक पृथकता एवं पारंपरिक जीवन-शैली के कारण बाह्य प्रभावों से अपेक्षाकृत अछूती रही है, वर्तमान समय में विकास योजनाओं एवं सरकारी हस्तक्षेपों के परिणामस्वरूप धीरे-धीरे परिवर्तन की प्रक्रिया से गुजर रही है। ये परिवर्तन सामाजिक, शैक्षिक, स्वास्थ्य एवं प्रजनन व्यवहार के विभिन्न आयामों में परिलक्षित हो रहे हैं। तथापि, यह परिवर्तन एक क्रमिक (gradual) एवं सीमित प्रक्रिया है, जिसमें पारंपरिक संरचनाएँ अभी भी सशक्त रूप से विद्यमान हैं और आधुनिक प्रभावों के साथ सह-अस्तित्व बनाए हुए हैं (सिंह, 2016)।

(i) शिक्षा का प्रसार

विकास योजनाओं के अंतर्गत जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षा के प्रसार पर विशेष ध्यान दिया गया है, जिसके परिणामस्वरूप अबूझमाड़िया समाज में भी शिक्षा के प्रति जागरूकता धीरे-धीरे बढ़ रही है। प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना, आवासीय विद्यालयों (आश्रम शालाओं) की उपलब्धता तथा सरकारी प्रोत्साहन योजनाओं ने बच्चों, विशेषकर बालिकाओं की शिक्षा में वृद्धि की है।

शिक्षा का प्रसार प्रजनन व्यवहार पर अप्रत्यक्ष किंतु गहरा प्रभाव डालता है। शिक्षित वर्ग में विवाह की आयु में वृद्धि, परिवार नियोजन के प्रति जागरूकता तथा संतानोत्पत्ति के प्रति अधिक विवेकपूर्ण दृष्टिकोण



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.2 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

विकसित होने लगता है। विशेष रूप से महिलाओं की शिक्षा उन्हें स्वास्थ्य, पोषण एवं प्रजनन संबंधी निर्णयों में अधिक सक्षम बनाती है, जिससे प्रजनन दर में संभावित कमी देखी जा सकती है (नाग, 2019)।

(ii) स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता

सरकार द्वारा जनजातीय क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार के प्रयासों के कारण अबूझमाडिया समाज में स्वास्थ्य संबंधी स्थितियों में कुछ सुधार परिलक्षित हो रहा है। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की स्थापना, टीकाकरण कार्यक्रम, जननी सुरक्षा योजनाएँ तथा पोषण अभियानों के माध्यम से मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य में सुधार लाने का प्रयास किया जा रहा है।

इन पहलों के परिणामस्वरूप मातृ एवं शिशु मृत्यु दर में धीरे-धीरे कमी आने की संभावना है, जिससे अधिक संतान उत्पन्न करने की 'सुरक्षा रणनीति' की आवश्यकता कम हो सकती है। , स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता से प्रसव के दौरान जोखिम में कमी आती है तथा आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों के प्रति विश्वास भी विकसित होता है (क्षत्रिय, 2015)।

(iii) परिवार नियोजन के प्रति जागरूकता

विकास कार्यक्रमों के अंतर्गत परिवार नियोजन एवं जनसंख्या नियंत्रण से संबंधित जागरूकता अभियान भी संचालित किए जा रहे हैं। आशा कार्यकर्ताओं, आंगनवाड़ी सेवाओं एवं स्वास्थ्य कर्मियों के माध्यम से जनजातीय समुदायों को छोटे परिवार के लाभ, गर्भनिरोधक साधनों के उपयोग तथा मातृ स्वास्थ्य के महत्व के बारे में जानकारी प्रदान की जा रही है। अबूझमाडिया समाज में परिवार नियोजन की स्वीकृति अभी सीमित स्तर पर है, क्योंकि पारंपरिक मान्यताएँ एवं सांस्कृतिक विश्वास अभी भी प्रजनन व्यवहार को प्रभावित करते हैं। फिर भी, युवा पीढ़ी एवं शिक्षित वर्ग में इस दिशा में धीरे-धीरे परिवर्तन के संकेत मिल रहे हैं (शर्मा, 2018)।

समेकित विश्लेषण

उपरोक्त तीनों कारकों—शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता एवं परिवार नियोजन के प्रति जागरूकता—के प्रभाव से अबूझमाडिया समाज में प्रजनन व्यवहार के स्वरूप में क्रमिक परिवर्तन की प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है। ये परिवर्तन जनसांख्यिकीय संक्रमण के अगले चरणों की ओर संकेत करते हैं, जहाँ जन्मदर में धीरे-धीरे कमी आने की संभावना होती है।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.2 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

तथापि, यह भी ध्यान देने योग्य है कि यह परिवर्तन अभी प्रारंभिक अवस्था में है और पारंपरिक सामाजिक-सांस्कृतिक संरचनाएँ अभी भी अत्यंत प्रभावी बनी हुई हैं। कबीलाई व्यवस्था, धार्मिक विश्वास, सामुदायिक नियंत्रण एवं पारंपरिक जीवन-शैली अभी भी प्रजनन व्यवहार को निर्धारित करने में प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं। आधुनिकता एवं परंपरा के बीच एक प्रकार का सह-अस्तित्व देखा जा सकता है, जहाँ दोनों प्रवृत्तियाँ समानांतर रूप से कार्य कर रही हैं (सिंह, 2016)।

निष्कर्षात्मक टिप्पणी

यह कहा जा सकता है कि अबूझमाडिया समाज में विकास योजनाओं एवं सरकारी हस्तक्षेपों के कारण परिवर्तन की प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है, किंतु यह अभी सीमित एवं क्रमिक है। शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं एवं परिवार नियोजन के प्रति जागरूकता प्रजनन व्यवहार को प्रभावित करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं, परंतु पारंपरिक मान्यताओं एवं सामाजिक संरचनाओं का प्रभाव अभी भी प्रमुख बना हुआ है।

भविष्य में नीतिगत हस्तक्षेपों को इस प्रकार रूपायित करना आवश्यक है, जिससे आधुनिक विकास एवं पारंपरिक सांस्कृतिक मूल्यों के बीच संतुलन स्थापित किया जा सके।

8. निष्कर्ष

उपरोक्त समग्र विश्लेषण के आधार पर यह स्पष्ट रूप से प्रतिपादित किया जा सकता है कि अबूझमाडिया जनजाति में प्रजनन व्यवहार एक बहुआयामी एवं जटिल सामाजिक-सांस्कृतिक प्रक्रिया है, जो केवल जैविक आवश्यकताओं तक सीमित नहीं है, पारिस्थितिक परिस्थितियों, आर्थिक संरचना, सामाजिक संगठन, धार्मिक विश्वासों तथा स्वास्थ्य संबंधी कारकों के अंतःक्रियात्मक प्रभावों से निर्मित होती है।

इस अध्ययन से यह तथ्य उभरकर सामने आता है कि अबूझमाडिया समाज में उच्च प्रजनन दर, अल्पायु विवाह, प्राकृतिक प्रजनन पद्धतियाँ तथा मातृत्व का उच्च सामाजिक महत्व जैसे तत्व उनके पारंपरिक जीवन-तंत्र का अभिन्न अंग हैं। कबीलाई व्यवस्था, विवाह संस्था एवं सामुदायिक नियंत्रण प्रजनन व्यवहार को सामाजिक वैधता प्रदान करते हैं, जिससे यह एक संरचित एवं विनियमित प्रक्रिया के रूप में कार्य करता है। स्वास्थ्य सेवाओं की सीमित उपलब्धता, पोषण की कमी एवं पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों पर निर्भरता मातृ एवं शिशु मृत्यु दर को प्रभावित करती है, जो अप्रत्यक्ष रूप से उच्च प्रजनन दर को बनाए रखने में



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.2 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

सहायक होती है। प्रजनन व्यवहार एक प्रकार की अनुकूलनात्मक रणनीति के रूप में उभरता है, जो सामाजिक एवं पारिस्थितिक अनिश्चितताओं के प्रति प्रतिक्रिया स्वरूप विकसित हुआ है।

वर्तमान समय में शिक्षा के प्रसार, स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता एवं परिवार नियोजन के प्रति बढ़ती जागरूकता के कारण इस जनजाति में परिवर्तन के प्रारंभिक संकेत दृष्टिगोचर हो रहे हैं। तथापि, यह परिवर्तन अभी सीमित स्तर पर है और पारंपरिक सामाजिक-सांस्कृतिक संरचनाएँ अभी भी अत्यंत प्रभावशाली बनी हुई हैं। आधुनिकता एवं परंपरा के मध्य एक संतुलित सह-अस्तित्व की स्थिति परिलक्षित होती है।

यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अबूझमाड़िया जनजाति के प्रजनन व्यवहार को समझने के लिए एक समग्र एवं बहुआयामी दृष्टिकोण आवश्यक है, जिसमें सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं पारिस्थितिक सभी आयामों को समाहित किया जाए। साथ ही, जनजातीय विकास नीतियों एवं स्वास्थ्य कार्यक्रमों के निर्माण में इन विशिष्टताओं को ध्यान में रखना अत्यंत आवश्यक है, ताकि विकास की प्रक्रिया सांस्कृतिक संवेदनशीलता एवं सामाजिक यथार्थ के अनुरूप प्रभावी ढंग से क्रियान्वित की जा सके।

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों के अनुरूप यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि अबूझमाड़िया जनजाति का प्रजनन व्यवहार एक समग्र सामाजिक-सांस्कृतिक तंत्र के अंतर्गत संचालित होता है, जिसकी प्रकृति पारंपरिक जीवन-शैली, पर्यावरणीय परिस्थितियों तथा आर्थिक संरचना से गहराई से जुड़ी हुई है।

प्रथम उद्देश्य के संदर्भ में यह स्पष्ट हुआ कि इस जनजाति में प्रजनन व्यवहार उच्च प्रजनन दर, प्राकृतिक प्रजनन पद्धतियों तथा मातृत्व के सामाजिक महत्व जैसे तत्वों से युक्त है, जो इसे एक विशिष्ट सांस्कृतिक प्रक्रिया के रूप में स्थापित करते हैं।

द्वितीय उद्देश्य के अनुरूप यह पाया गया कि विवाह संस्था, कबीलाई संरचना एवं लैंगिक संबंध प्रजनन व्यवहार को नियंत्रित एवं विनियमित करने में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। अल्पायु विवाह, कबीलाई नियम एवं सामुदायिक नियंत्रण इस व्यवहार को सामाजिक वैधता प्रदान करते हैं।

तृतीय उद्देश्य के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया कि स्वास्थ्य सेवाओं की सीमित उपलब्धता, पोषण की कमी एवं पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों पर निर्भरता मातृ एवं शिशु मृत्यु दर को प्रभावित करती है, जिसके परिणामस्वरूप उच्च प्रजनन दर एक अनुकूलनात्मक रणनीति के रूप में विकसित होती है।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.2 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

चतुर्थ उद्देश्य के अनुसार यह देखा गया कि शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता एवं परिवार नियोजन के प्रति बढ़ती जागरूकता के कारण इस जनजाति में परिवर्तन की प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है। तथापि, यह परिवर्तन अभी प्रारंभिक अवस्था में है और पारंपरिक सामाजिक संरचनाएँ अभी भी प्रभावी बनी हुई हैं।

यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अबूझमाड़िया जनजाति का प्रजनन व्यवहार बहुआयामी कारकों से प्रभावित एक जटिल प्रक्रिया है, जिसे समझने के लिए पारंपरिक एवं आधुनिक दोनों दृष्टिकोणों का समन्वित अध्ययन आवश्यक है।

संदर्भ सूची

1. बोस, एन. के. (2017). *ट्राइबल लाइफ इन इंडिया*। नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट।
2. एल्विन, वी. (2008). *द मुरिया एंड देयर घोटुला*। नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
3. क्षत्रिय, जी. के. (2015). जनजातीय समुदायों में पारंपरिक स्वास्थ्य प्रथाएँ। *इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च*, 141(3), 267–275।
4. नाग, एम. (2019). भारत में जनजातीय समाज और प्रजनन व्यवहार। *इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली*, 54(12), 45–52।
5. शर्मा, ए. एन. (2018). *जनसांख्यिकी एवं जनसंख्या अध्ययन*। नई दिल्ली: टाटा मैकग्रा हिल।
6. सिंह, के. एस. (2016). *पीपल ऑफ इंडिया: ट्राइबल कम्युनिटीज*। कोलकाता: एंथ्रोपोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया।
7. स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय. (2020). *राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5)*। भारत सरकार।
8. झा, पी. (2014). भारत में जनजाति एवं विकास। *सोशियोलॉजिकल बुलेटिन*, 63(2), 201–218।
9. दुबे, एस. सी. (2012). *भारतीय जनजातियाँ*। नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट।
10. मजूमदार, डी. एन. (2010). *रेसेज एंड कल्चर ऑफ इंडिया*। नई दिल्ली: एशिया पब्लिशिंग हाउस।
11. चौधरी, एस. (2016). जनजातीय समाज में सामाजिक संरचना एवं परिवर्तन। *भारतीय समाजशास्त्र समीक्षा*, 22(1), 55–70।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.2 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

12. वर्मा, आर. (2018). जनजातीय स्वास्थ्य एवं पोषण की स्थिति। *भारतीय जनस्वास्थ्य पत्रिका*, 12(2), 88–102।
13. गुप्ता, पी. (2017). जनजातीय क्षेत्रों में परिवार नियोजन की चुनौतियाँ। *सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका*, 9(3), 120–135।
14. पाटिल, एस. (2019). जनजातीय महिलाओं का स्वास्थ्य एवं प्रजनन व्यवहार। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस*, 7(4), 200–210।
15. राव, एम. (2015). भारत में जनजातीय विकास नीतियाँ। नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन।
16. तिवारी, ए. (2020). जनजातीय समाज में शिक्षा का प्रभाव। *शिक्षा एवं समाज*, 14(1), 33–47।
17. कुमार, ए. (2016). जनजातीय अर्थव्यवस्था एवं श्रम संरचना। *आर्थिक अध्ययन पत्रिका*, 10(2), 75–90।
18. सक्सेना, डी. (2018). ग्रामीण एवं जनजातीय स्वास्थ्य सेवाएँ। नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।
19. मिश्रा, एल. (2017). जनजातीय संस्कृति एवं सामाजिक परिवर्तन। *भारतीय मानवशास्त्र जर्नल*, 5(2), 140–155।
20. चंद्र, के. (2019). जनसांख्यिकीय संक्रमण एवं जनसंख्या अध्ययन। नई दिल्ली: अकादमिक पब्लिशर्स।